IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रमिक उत्प्रवास का भौगोलिक अध्ययन : सीधी जिले के सिहावल तहसील के विशेष संदर्भ में

राकेश कुमार प्रजापति [1] एवं आर. पी. सिंह [2]

1. सहायक प्राध्यापक–भूगोल, प्रधानमंत्री कालेज ऑफ एक्सीलेंस, संजय गॉधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र),
2. प्राध्यापक भूगोल एवं क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग, संभाग रीवा (म.प्र.),

सारांश– प्रस्तुत शोध आलेख मध्य प्रदेश के सीधी जिलें के सिहावल तहसील से होने वाले श्रमिक उत्प्रवास के भौगोलिक अध्ययन पर केन्द्रित है। यह शोध अध्ययन क्षेत्र में उत्प्रवास के प्रतिरूप की खोज, उत्प्रवास की लिंगानुसार संरचना, उत्प्रवासी श्रमिकों की पूर्व एवं पश्च आय, उत्प्रवास की अवधि, आयु संरचना एवं वर्गवार संरचना की खोज हेतु किया किया गया है। शोध कार्य हेतु प्राथमिक समंको का संकलन एवं विश्लेषण किया गया है, जिसमें पॉच चरों– आयु, लिंग, श्रेणी/संवर्ग, उत्प्रवास की अवधि एवं आय को सम्मिलित किया गया है। पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं की जॉच काई वर्ग परीक्षण एवं विल्कोक्सन परीक्षण से की गई है। काई वर्ग परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि सभी चयनित ग्राम पंचायतो से श्रमिकों का उत्प्रवास एक समान न होकर यादृच्छिक है तथा उत्प्रवासी श्रमिकों की लिंगानुसार संरचना में पर्याप्त अन्तर है। यहॉ महिला श्रमिक उत्प्रवास बहुत कम तथा पुरूष श्रमिक उत्प्रवास अधिक है। विल्कोक्सन परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास पूर्व आय एवं पश्च आय में अन्तर महत्वपूर्ण है और अधिकांश मामलों में उत्प्रवास के पश्चात श्रमिकों की आय में वृद्धि हुयी है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक उत्प्रवास 26–32 आयुवर्ग के श्रमिकों में तथा श्रेणीवार सर्वाधिक उत्प्रवास अनुसूचित जाति में हुआ है।

मुख्य शब्द : श्रमिक उत्प्रवास, काई वर्ग परीक्षण, विल्कोक्सन परीक्षण, सिहावल तहसील।

प्रस्तावना :

मानव में उत्प्रवास की प्रवृत्ति आदिकाल से ही चली आ रही है। प्रारम्भ में मनुष्य जब आखेट एवं पशुचारक अवस्था में था तब वह शिकार एवं पशुओं के चारे–पानी के लिए उत्प्रवास करता था, इसके पश्चात कृषि की खोज ने मानव जीवन में कुछ स्थायित्व लाया लेकिन उत्प्रवास की प्रवृत्ति रुकी नहीं। कालान्तर में हुयी औद्योगिक क्रान्ति से उत्प्रवास की प्रवृत्ति को और प्रोत्साहन मिला और आज उत्प्रवास मानव जीवन का अभिन्न अंग बनकर रह गया है। उत्प्रवास स्थायी अथवा अस्थायी हो सकता है। किसी क्षेत्र में मौजूद प्रत्याकर्षक कारक जैसे–निर्धनता, रोजगार की न्यून संभावनाए, निम्न जीवन

स्तर, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी सुविधाओं का अभाव आदि संबंधित क्षेत्र से जनसंख्या उत्प्रवास को प्रेरित करते है।

मध्य प्रदेश के पूर्व में स्थित सीधी जिला एवं सिहावल तहसील की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। यहॉ खनिज एवं उद्योंग धन्धों का अभाव है, अतः ग्रामीण लोगों के जीवन का मुख्य आधार कृषि है। यहॉ की लगभग 75 प्रतिशत आबादी किसान एवं खेतीहर मजदूर के रुप में कार्यरत है। यहॉ की उबड़–खाबड़ धरातलीय संरचना, पथरीली एवं कम उपजाउ मृदा तथा सिचाई सुविधाओं की कमी से कृषि लागत अधिक आती है और मुनाफा कम प्राप्त होता है। निरन्तर बढ़ती हुयी जनसंख्या से कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा है और जोतों का आकार भी छोटा हुआ है, जिससे कृषि से आय और भी कम हुयी हैं। अतः अधिक आय की प्राप्ति की लालशा, गैर कृषि रोजगार के अवसरों की कमी तथा प्रदेश एवं देश के अन्य हिस्सों में बढ़ते श्रमिकों की मांग से सिहावल तहसील से श्रमिक उत्प्रवास के लिए विवश हुए है।

अध्ययन क्षेत्र :

सिहावल तहसील सीधी जिले के उत्तर–पूर्व में $23^{0}47'$ उत्तरी अक्षांश से $24^{0}42'$ उत्तरी अक्षाश तथा $81^{0}18'$ पूर्वी देशान्तर से $82^{0}49'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह 613.80 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में विस्तृत है। उत्तर में इसकी सीमा मऊगंज जिले से, उत्तर पूर्व में सिंगरौली जिले से, दक्षिण–पश्चिम में चुरहट व गोपद बनास तहसील से तथा दक्षिण–पूर्व में बहरी तहसील से लगती है। उत्तर–पूर्व में इसकी प्राकृतिक सीमा कैमूर पहाड़ी द्वारा तथा दक्षिण–पूर्व में सोन नदी घाटी द्वारा निर्धारित होती है। जिला मुख्यालय से इसकी दूरी 60 कि.मी. तथा संभाग मुख्यालय से 145 कि.मी. है।

2011 की जनगणना के अनुसार सिहावल तहसील की कुल जनसंख्या 268934 है, जिसमें पुरुष जनसंख्या 163068 तथा महिला जनसंख्या 132866 है। लिंगानुपात 976 एवं साक्षरता दर 62.9 प्रतिशत है। यहॉ की कुल जनसंख्या में से 110178 विभिन्न रोजगार गतिविधियों जैसे –किसान, कृषि मजदूर, घरेलू उद्योंग एवं सीमांत श्रमिक के रुप में कार्यरत है तथा 158756 गैर कार्यरत जनसंख्या है।

उद्देश्य :

- अध्ययन क्षेत्र के श्रमिकों में उत्प्रवास के प्रतिरुप का अध्ययन करना।
- उत्प्रवासी श्रमिकों की लिंगानुसार संरचना का अध्ययन करना।
- उत्प्रवासी श्रमिकों की आयु संरचना का अध्ययन करना।
- उत्प्रवासी श्रमिकों की वर्गवार संरचना का अध्ययन करना।
- उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास पूर्व व पश्च आय के अन्तर का साख्यिकीय परीक्षण करना।
- उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास अवधि का पता लगााना।

परिकल्पनाएँ :

1. शून्य परिकल्पना–सभी चयनित ग्राम पंचायतों से श्रमिक उत्प्रवास यादृच्छिक/असमान नहीं है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– सभी चयनित ग्राम पंचायतों से श्रमिक उत्प्रवास यादृच्छिक/असमान है।
2. शून्य परिकल्पना– उत्प्रवासी श्रमिकों की लिंगानुसार संरचना में अन्तर नहीं है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– उत्प्रवासी श्रमिकों की लिंगानुसार संरचना में अन्तर है।
3. शून्य परिकल्पना– सभी आयु वर्गों में उत्प्रवास समान नहीं होता है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– सभी आयु वर्गों में उत्प्रवास समान होता है।
4. शून्य परिकल्पना– सभी श्रेणी के श्रमिकों में उत्प्रवास एक समान नहीं है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– सभी श्रेणी के श्रमिकों में उत्प्रवास एक समान है।
5. शून्य परिकल्पना– उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास पूर्व एवं पश्च आय में अन्तर नहीं है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– उत्प्रवासी श्रमिकों के उत्प्रवास पूर्व एवं पश्च आय में महत्वपूर्ण अन्तर है।
6. शून्य परिकल्पना–उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास की अवधि में अन्तर नहीं होता है।
   वैकल्पिक परिकल्पना– उत्प्रवासी श्रमिकों की उत्प्रवास की अवधि में अन्तर होता है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध आलेख की प्रकृति परीक्षणात्मक व विश्लेषणात्मक है। शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों आकड़ों का उपयोग किया गया है। शोध प्रारुप का विवरण निम्नानुसार है–

1. **निदर्शन प्रारुप**– अध्ययन क्षेत्र के कुल 46 ग्राम पंचायतों में से 5 ग्राम पंचायत– मेढ़ौली, बांकी, हटवा–बरहा टोला, सुपेला एवं कड़ियार का चयन शोधकर्ता की सुविधानुसार किया गया है। चयनित सभी 5 ग्राम पंचायतों की जनसंख्या को श्रेणीवार चार स्तरों–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य एवं पिछड़ा वर्ग में बॉटकर स्तरीकृत रैण्डम प्रतिदर्श के समान आबंटन विधि द्वारा प्रत्येक स्तर से 5–5 श्रमिक परिवारों का चयन तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत से 20–20 श्रमिक उत्प्रवासी परिवारों का चयन इस प्रकार से किया गया है कि वह सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके। सभी चयनित ग्राम पंचायतों के कुल 100 श्रमिक परिवारों से उत्प्रवास संबंधी आकड़े एकत्रित किए गए है।
2. **प्रदत्त संग्रहण की तकनीक**– यह शोध कार्य प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्राथमिक समंको का संकलन प्रश्नावली अनुसूची द्वारा की गई है जबकि द्वितीयक समंक जिला जनगणना पुस्तिका से लिए गए है।
3. **साख्यिकीय उपकरण** – पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं के सत्यता की जॉच हेतु संकलित प्राथमिक समंको का विश्लेषण काई वर्ग परीक्षण, विल्कोक्सन परीक्षण तथा चार्ट एवं प्रतिशत विधि द्वारा परिणाम निकालकर की गई है।

काई वर्ग परीक्षण $x^2 = \frac{\Sigma(f_0 - f_e)^2}{f_e}$

जहॉ – f_0 = अवलोकित आवृत्ति

f_e = प्रत्याशित आवृत्ति

विल्कोक्सन परीक्षण : R(+) = धनात्मक क्रम

R(-) = ऋणात्मक क्रम

T = समान चिन्हित क्रमों का छोटा योग

छोटे प्रतिदर्शों $(N \leq 25)$ के लिए परिगणित T मान की सार्थकता का निर्धारण विल्कोक्सन समेल युग्म चिन्हित परीक्षण के T मानों की सारणी के द्वारा किया जाता है। यदि T का मान सारणी मान के बराबर अथवा कम होता है तब इसे सार्थक कहा जाता है एवं शून्य परिकल्पना को निरस्त कर दिया जाता है।

प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

चयनित सभी पॉच ग्राम पंचायतों के 100 परिवारों की कुल जनसंख्या 723 में से कुल 118 श्रमिकों का उत्प्रवास हुआ है, जिसमें पुरुष उत्प्रवास की संख्या 107 तथा महिला उत्प्रवास की संख्या 11 है। अध्ययन क्षेत्र से संकलित किए गए प्राथमिक प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या इस प्रकार से है–

तालिका 1

सर्वेक्षित आकड़ो से काई वर्ग परीक्षण

ग्राम पंचायत का नाम	f_0	f_e	$f_0 - f_e$	$(f_0 - f_e)^2$	$x^2 = \frac{\sum(f_0 - f_e)^2}{f_e}$
मेढ़ौली	31	23.6	7.4	54.76	2.36
बंकी	29	23.6	5.4	29.16	1.23
हटवा बरहा टोला	18	23.6	5.6	31.36	1.32
सुपेला	28	23.6	4.4	19.36	0.82
कडियार	12	23.6	11.6	134.56	5.70
N= 5	118				$x^2 = \frac{\sum(f_0-f_e)^2}{f_e}$ =11.43

अध्येता के प्रथम परिकल्पना की जॉच तालिका 1 में काई वर्ग परीक्षण के समान वितरण की परिकल्पना द्वारा की गई है। जिसमें परिगणित $x^2 =$ 11.43 का मान df=4 के लिए .05 सार्थकता स्तर पर काई वर्ग के सारणी मान 9.488 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना की अवलोकित तथा प्रत्याशित वितरणों में अन्तर नहीं है, को .05 स्तर पर निरस्त किया जा सकता है परिणामतः समान वितरण की परिकल्पना को भी निरस्त किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के सभी ग्राम पंचायतों से उत्प्रवास का वितरण यादृच्छिक या असमान है। इस प्रकार प्रथम शून्य परिकल्पना निरस्त तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका 2

सर्वेक्षित आकड़ो से काई वर्ग परीक्षण

लिंग	f_0	f_e	$f_0 - f_e$	$(f_0 - f_e)^2$	$x^2 = \frac{\sum(f_0 - f_e)^2}{f_e}$
पुरुष	107	54	53	2809	52.01
महिला	11	54	43	1849	34.24
N=2					$x^2 = \frac{\sum(f_0-f_e)^2}{f_e}$ = 86.25

तलिका 2 में अध्येता के द्वितीय परिकल्पना की जॉच काई वर्ग परीक्षण के समान वितरण की परिकल्पना द्वारा की गई है, जिसमें परिगणित $x^2 = 86.25$ का मान df=1 के लिए .05 स्तर पर काई वर्ग के सारणी मान 3.841 से अधिक है, इसलिए शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि सिहावल तहसील के उत्प्रवासी श्रमिकों के लिंगानुसार संरचना में अन्तर है अर्थात पुरुष एवं महिला उत्प्रवास समान नहीं है।

तालिका 3

उत्प्रवासी श्रमिकों की आयु संरचना

आयु वर्ग	चयनित ग्राम पंचायत					योग	
	मेढ़ौली	बांकी	हटवा बरहा टोला	सुपेला	कडियार	आवृत्ति	प्रतिशत
14—20	4	4	1	2	1	12	1.66
20—26	8	5	4	7	3	27	3.73
26—32	9	10	7	11	4	41	5.67
32—38	6	8	4	4	2	24	3.32
38—44	3	1	1	2	1	8	1.11
44—50	1	1	1	2	1	6	0.83
योग	31	29	18	28	12	118	16.32

स्त्रोत— सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े 2025

तलिका 3 से स्पष्ट है कि सभी चयनित ग्राम पंचायतों से कुल 16.32 प्रतिशत श्रमिक उत्प्रवास हुआ है। 14—20 आयुवर्ग में 1.66 प्रतिशत, 20—26 आयुवर्ग में 3.73 प्रतिशत, 26—32 आयुवर्ग में 5.67 प्रतिशत, 32—38 आयुवर्ग में 3.32 प्रतिशत, 38—44 आयुवर्ग में 1.11 प्रतिशत तथा 44—50 आयुवर्ग में 0. 83 प्रतिशत श्रमिक उत्प्रवास हुआ है। इस प्रकार सभी आयुवर्गों में उत्प्रवास समान नहीं है। अतः अध्येता की तीसरी शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना को निरस्त किया जाता है।

तालिका 4

उत्प्रवासी श्रमिकों की वर्गवार संरचना (प्रतिशत में)

श्रेणी	चयनित ग्राम पंचायत					योग	
	मेढ़ौली	बांकी	हटवा बरहा टोला	सुपेला	कडियार	आवृत्ति	प्रतिशत
अनुसूचित जाति	9.23	8.78	3.66	5.80	2.80	30.27	6.05
अनुसूचित जनजाति	6.15	3.38	3.66	5.07	1.40	19.66	3.93
पिछड़ा वर्ग	4.62	4.73	2.44	8.70	2.80	23.29	4.66
सामान्य	3.85	2.70	1.22	0.72	1.40	9.89	1.98

स्त्रोत— सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े 2025

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक श्रमिक उत्प्रवास अनुसूचित जाति में 6.05 प्रतिशत हुआ है, इसके बाद क्रमशः पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग में उत्प्रवास अधिक है। सामान्य वर्ग में सभी वर्गों की तुलना में श्रमिक उत्प्रवास कम है। अतः अध्येता की चौथी शून्य परिकल्पना— सभी श्रेणी में उत्प्रवास की दर समान नहीं है स्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना निरस्त की जाती है।

तालिका 5

सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़ो से विल्कोक्सन परीक्षण

उत्प्रवासी श्रमिक	मसिक आय (रुपये में)		d=(x-y)	R	R (+)	R (-)
	पूर्व आय (x)	पश्च आय (y)				
1	4500	10000	−5500	6		6
2	3000	12000	−9000	10		10
3	5000	8000	−3000	3		3
4	3500	10000	−6500	8		8
5	4000	9000	−5000	4.5		4.5
6	10000	8000	+2000	2	2	
7	6000	13000	−7000	9		9
8	7500	7000	+500	1	1	
9	5000	10000	−5000	4.5		4.5
10	6000	12000	−6000	7		7
N=10					$\sum$ R (+) =03	$\sum$ R (-) =52

अध्ययन क्षेत्र सिहावल तहसील के चयनित पॉच ग्राम पंचायतों के 10 उत्प्रवासी श्रमिकों से उत्प्रवास पूर्व एवं पश्च आय से संबंधित आकड़े एकत्रित किए गये है। पूर्व एवं पश्च आय के अन्तर की सार्थकता जॉच तालिका 5 में विल्कोक्सन समेल युग्म चिन्हित क्रम परीक्षण द्वारा की गई है। परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि N=10 के लिए .05 सार्थकता स्तर के लिए T का मान सारणी मान 11 से कम है, अतः परिगणित T= 03 का मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है इसलिए .05 स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है। अर्थात उत्प्रवासी श्रमिकों की पूर्व और पश्च आय में महत्वपूर्ण अन्तर है। आकड़ो से स्पष्ट है कि अधिकांश मामलों में आय बढ़ी हैं अर्थात सकारात्मक अन्तर है जबकि दो मामलों में आय में कमी आयी है।

दण्ड आरेख 1

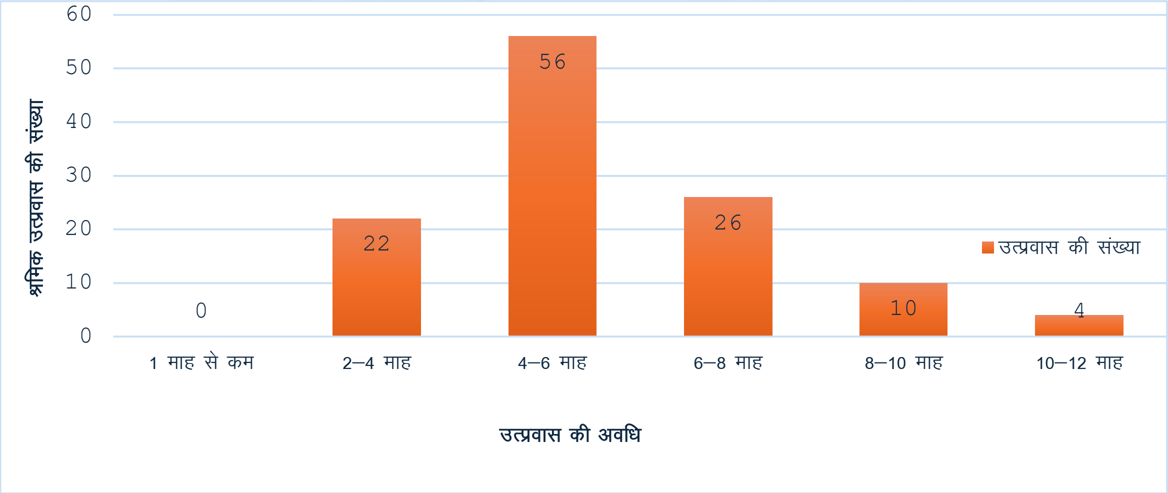

दण्ड आरेख 1 में चयनित ग्राम पंचायतों से उत्प्रवासी श्रमिकों की संख्या एवं उत्प्रवास की अवधि को प्रदर्शित किया गया है। आरेख से स्पष्ट है कि चयनित ग्राम पंचायतों के कुल 118 उत्प्रवासी श्रमिकों में से सर्वाधिक 56 श्रमिकों का उत्प्रवास 4–6 माह की अवधि के लिए, 26 श्रमिकों का उत्प्रवास 6–8 माह की अवधि के लिए, 22 श्रमिकों का उत्प्रवास 2–4 माह की अवधि के लिए, 10 श्रमिकों का उत्प्रवास 8–10 माह की अवधि के लिए तथा 4 श्रमिकों का उत्प्रवास 10–12 माह की अवधि के लिए हुआ है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में उत्प्रवासी श्रमिकों के उत्प्रवास की अवधि में अन्तर दृष्टिगोचर होता है। अतः छठी शून्य परिकल्पना निरस्त एवं वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

शोध अध्ययन में यह पाया गया कि सिहावल तहसील में कृषि भूमि पर बढ़ते जनसंख्या दबाव एवं गैर–कृषि रोजगार के अवसरों की कमी के कारण श्रमिकों का उत्प्रवास हुआ है। यहाँ सभी ग्राम पंचायतों से उत्प्रवास एक समान न होकर यादृच्छिक है। 26–32 आयुवर्ग के श्रमिकों में उत्प्रवास सर्वाधिक 5.67 प्रतिशत तथा 44–50 आयुवर्ग में उत्प्रवास सबसे कम 0.83 प्रतिशत हुआ है। श्रेणीवार अनुसूचित जाति में सर्वाधिक 6.05 प्रतिशत तथा सामान्य वर्ग में सबसे कम 1.98 प्रतिशत श्रमिक उत्प्रवास हुआ है। अध्ययन क्षेत्र से सर्वाधिक श्रमिक उत्प्रवास 4–6 माह की अवधि के लिए हुआ है। साख्यिकीय परीक्षण से यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में उत्प्रवास के पश्चात श्रमिकों की आय बढ़ी है।

अध्ययन क्षेत्र से हो रहे श्रमिक उत्प्रवास को रोकने के लिए सरकार एवं प्रशासन द्वारा निम्नांकित कदम उठाए जाने चाहिए–

1. अध्ययन क्षेत्र में सरकार एवं प्रशासन को व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर जोर दिया जाना चाहिए।
2. गैर–कृषि रोजगार के अवसरों का सृजन किया जाना चाहिए।
3. लघु एवं कुटीर उद्योंगों की स्थापना हेतु आवश्यक संयन्त्र एवं वित्तीय सहायता उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
4. मनरेगा जैसी सरकारी योजनाओं के माध्यम से वर्ष में लगभग 8–10 माह तक रोजगार उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

संदर्भ (Reference)-

1. गुप्ता, एस. पी. (2013), अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
2. जिला जनगणना पुस्तिका सीधी, पार्ट XII-B (2011)
3. पन्त, श्वेता एवं जोशी, ज्योति, (2019) जनसंख्या प्रवास, कारण और प्रभाव : उत्तराखण्ड राज्य के विशेष संदर्भ में, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एनालाटिकल रिव्यू, 6 (1) : 1305–1313
4. पाण्डेय, अनुपम, (2007), भारत का जनसंख्या भूगोल, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस न्यू दिल्ली
5. राठौर, आरती, (2022), छत्तीसगढ़ राज्य से आदिवासियों का पलायन : एक अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थाट्स, अंक 10 (11) : 660–669
6. सिंगोतिया, बलराम एवं धुर्वे, कविता (2016), ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन की समस्या : आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन (छिंदवाड़ा जिलें की अमरवाडा तहसील के विशेष संदर्भ में), दी इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड ह्यूमैनिटीज, अंक 5 (3) : 147–157
7. सेठी, अर्चना एवं सोनेकर, बी. एल. (2018), छत्तीसगढ़ के रायपुर जिलें के खेतीहर परिवारों में उत्प्रवास की समस्या, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस इन सोशल साइंस, अंक 6 (4) : 187–194
8. हुसैन, माजिद (2019), मानव भूगोल, रावत पब्लिकेशन जयपुर